'Research Journey' International Multidisciplinary E- Research Journal
Vol. 1 Issue. 2
ISSN : 2348-7143 (Online)
April-June-2014

भारतीय नारी की बदलती प्रतिमा

श्री.गजानन सुरेश वानखेडे
शोध छात्र
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय,
जलगाँव, [महाराष्ट्र] भारत.

भूमिका :-

भारतीय नारी की विकास यात्रा में अनेक चढ़-उतार,संघर्ष,प्रतिरोध आते रहे है। आजादी के बाद नारी की स्थिति में समाजसुधारको के कारण काफी मात्रा में परिवर्तन हुआ। कालानुसार नारी की स्थिति में जो बदलाव आया है उसीका जायजा लेने की कोशिश इस शोध आलेख में की गयी है।'यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता' इस उक्ति के अनुसार प्राचीन काल से नारी को भारतीय संस्कृति में अप्रतिम स्थान रहा यह स्पष्ट होता है किंतु कलानुसार नारी के प्रति समाज के दृष्टिकोन में बदलाव आया है। प्राचीन काल से आधुनिक काल तक नारी का परिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्थितियों में अनेक बदलाव देखने को मिलते है। कुछ बदलाव नारी के प्रगती के लिए कारगर साबित हुए तो कुछ बदलावो से नारी की अधोगति हुई है।

वैदिक काल में नारी की स्थिति प्रगतिशील दिखाई देती है। उसे पुरुषों के बराबर शिक्षा ग्रहन करने का अधिकार था। वेद तथा धार्मिक ग्रंथ को पढ़ने का स्वातंत्र नारी को था। अर्थात वैदिक काल में नारी भोग्या न मानकर पुरुष की अर्धांगिनी एवं सह धर्मिणी का स्थान प्राप्त था। "वैदिक युग में हम देखते है कि नारी सामाजिक धार्मिक और अध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुष की सहभागिनी है वह वंदनीय है, सम्मानित है। वह पुरुषों के समान ही विविध प्रकार के अधिकारों का उपभोग करती है पुरुषों के साथ वह यज्ञ में भाग लेती है। उनसे शास्त्रर्थ करती है और उन्हें पराजीत तक करती है। कुछ तो अपनी विद्वता के बलपर ऋषि के पद तक प्राप्त कर लेती है मैत्रेयी, विश्वरा, गार्गी, अनूसया आदि उस युग की ऐसी नारियाँ है जो पुरुषों से किसी भी प्रकार कम नहीं है।" [१] अर्थात वैदिक काल में नारी के प्रति समाज में तिरस्कार की भावना नहीं थी। वैदिक काल में नारी को महत्वपूर्ण अधिकार प्राप्त थे जिसमें जीवन साथी इच्छा नुसार चुनने का,विधवा को पुर्नविवाह करने का ,शिक्षा प्राप्त करने का, पिता की संपत्ति में पूरा हिस्सा देना आदि थे। वैदिक काल से धीरे-धीरे नारी की स्थिति गिरावट आने लगी थी। रुढीवाद, परंपरा, अंधश्रध्दा आदि के कारण नारी स्थिति एक पिजंरे में बंद पक्षी की तरह हो गयी थी।

मध्यकाल यह वह काल है जिसमें नारी की स्वतंत्रता छिन्नी एवं आज तक उस बंधनो से मुक्त नहीं हो पा रही है। "मध्यकाल में पत्नी की स्थिति का निर्धारण पितृ-सत्ता-प्रधान आदर्शो पर हुआ करता था। नारी की सीमा परिवार तक ही सीमित थी। उसके जीवन की सार्थकता आदर्श पत्नी और माता बनने में ही थी। इस समय भी वह गृहलक्ष्मी,सास-ससुर

की स्नेहपात्री,तथा परिवार में प्रेम व स्नेह की भाजन थी और कर्तव्य परायण, त्यागमयी, ममतामयी के रुप में आदर की पात्र थी। "[२] नारी की सबसे दयनीय स्थिति मध्ययुग में थी। युवतियों को घर में कैद कर रखा जाता था। पर्दा पध्दति इसी काल की अमानवीय प्रथा है जो वह आज भी प्रचलित है। सारंशत: वैदिक काल नारी को सम्मान का स्थान था। मध्ययुग में नारी का स्थान धीरे-धीरे गिर रहा था। "डॉ. विनोद सिंह का कथन है, मध्यकाल में नारी समाज की आधारभूत शिला पर विवश बैठी खिसकती रही और पुरूष की वासनात्मक आँखें उसके उन्नत उरोजों को बींधती रहीं, पर किसी ने उसके आँसुओं की कीमत नहीं आँकी।"[३] तत्कालीन परिस्थिति में मुगलो एवं मुस्लिमों के अक्रमण बढ़ गये। इनकी काम लोलुप दृष्टि से बचाने के लिए नारी को घर की चार दिवारों के भितर कैद कर रखा गया क्योंकि इस काल में लडकियों का अपहरण,उसका क्रय-विक्रिय होने लगा। नारी की इस स्थिति वजह डॉ.बाहेती लिखते है,"नारी की शरीरिक संरचना आर्थिक क्षेत्र में नारी की निष्क्रियता और साथ ही मुस्लिमों का आक्रमण हुआ और यवनों की काम लोलुप-दृष्टि से बचाने के लिए भारतीय नारी की रक्षा का उपक्रम होने लगा। उसे घर के भीतर रखा जाने लगा। कन्या के रुप में पिता द्वारा,पत्नी के रुप में पति द्वारा और वृध्दा के रुप में पुत्र द्वारा रक्षिता नारी पुरुष पर आश्रित होती चली जाती है इस समय भी भारतीय नारी का तेजस्वी रुप पूर्णत:लुप्त नहीं हुआ।"[४] इस काल में नारी को शिक्षा से हाथ धोना पड़ा साथ-साथ समस्त अधिकार उससे छिन्न लिये गये। "नारी को मूक यताना सहनी पड़ी। नारी की सबसे दयनीय स्थिति इसी काल में थी। भारत पर मुसलमानों के आक्रामणो और मुगलों के राज्य के बाद, स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई। ब्राम्हाणों ने रक्त की शुध्दता,स्त्री-सतीत्व की रक्षा और हिंदू धर्म की रक्षा के नाम पर उसे इतने अधिक सामाजिक बंधनो से जकड़ दिया कि उसके स्वतंत्र अस्तित्व का नामोनिशान न रहा। लड़कियों की शिक्षा एकदम समाप्त हो गई। मुस्लिम आक्रमणों के दौरान लड़कियों के अपहरण की घटनाएँ बढी तो हिंदुओं में छोटी-छोटी बच्चियों का विवाह किया जाने लगा। पर्दा-प्रथा भी प्रारंभ हो गई।" [५] इसी काल में नारी को आश्रित बनाकर रख दिया गया। नारी इस काल में - हासोन्मुख होती गयी। इसी काल में पुरुष प्रधान समाज अस्तित्व में आया नारी पर अनेक बंधन इस काल में लगाये गये। नारी की स्थिति को सीमित कर भोग की वस्तु बनाकर रख दिया। पुरुषो की सेवा करना,पत्नी को पति सेवा करना यह संस्कार आत्मसात करने पड़े। रुढ़ी परंपरा धर्म के नाम रीति रिवाजों में नारी को जकड़कर रख दिया। रामयण एवं महाभारत में नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है किंतु उसे परिवारिक बंधन में रहना पड़ता था। इस काल में नारी को वस्तु का दर्जा दिया है। युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी को दाव पर लगाना वसैही बहुविवाह पध्दति प्रचलित थी विधवाओं को पुर्नविवाह का अधिकार नहीं था। इसकारण समाज में विधवाओं की संख्या अधिक थी। संत कवियों ने नारी को विशेष स्थान न देकर उसका वर्णन किया। जैसे रामचरित मानस के रचियिता तुलसीदास लिखते है,

"प्रभु भल कीन्ह मोहि सिख दीन्ही । मरजादा पुनि तुम्हारी कीन्ही।।
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी । सकल ताड़ना के अधिकारी।।" [६]

समाज में जो घटनाएँ घटित होती है उसीका प्रतिबिंब हमे साहित्य में दिखाई देता है। तुलसी ने भी अपने काल की परिस्थिति का वर्णन अपने साहित्य में किया है। मतलब ढोल, गँवार, शूद्र, पशु और स्त्री ये सब शिक्षा के अधिकारी है।

"अवगुण मूल प्रद, प्रमाद सब दुख खनि।"[७]
यानि नारी को अवगुणो की जड़ और दु:खों की खन बताया है।
इसी काल में कबीर ने कहा है,
"नारी की झांयी पडत अंधा होत भुजंग
कबिरा तिनकी कौन गति जो नित नारी के संग।"
नसरी नसावें तीन सुख जा नर पासै होई
भगति मुकति निज गयान मैं,पैंसि न सकई कोई।[८]

इससे इस युग की नारी की स्थिति की झलक मिलती है। इस काल में विधवाओ को जिंदा पती के साथ जलाया जाता था। सती प्रथा जो धर्म के नामपर पशू समान बंधन लगाये जा रहे थे। बौध्द काल में नारी की स्थिति में कुछ अच्छे बदलाव हुए। आदिकाल में नारी को न आदर भाव था न सम्मान था उसे सिर्फ भोग्या के रुप में देखा जाता था। आदिकाल में नारी वस्तु का दर्जा प्राप्त था। नारी को प्राप्त करने के लिए युध्द खेले जाते थे।

आधुनिक काल में नारी की स्थिति में अमुलाग्र परिवर्तन हुआ। इस काल में नारी पिछड़े वर्ग में गिनी जाने लगी इसलिए समाज सुधारको ने नारी केंद्र में रखकर उसकी स्थिति सुधारने के लिए प्रयास किया। इस संदर्भ में डॉ के.पी.बाहेती लिखते है, "अंग्रेजो के सम्पर्क में आने के साथ-साथ भारत आधुनिक युग में प्रवेश करता है। विकास के इस युग में प्रवेश करता है। विकास के इस युग में स्त्री का भाग्य करवट लेता है। सामजिक कुरीतियों की बेडियों से मुक्त शिक्षा के प्रकाश से प्रदिप्त, आर्थिक स्वावलंबन की और गतिशील जो नारी आज हमें दिखायी देती है इसके पीछे समाजसुधारकें राजनेताओ एवं महिला आन्दोलनकारियों के सौ वर्षो का इतिहास है।"[९] नारी की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई देते है साहित्य के क्षेत्र में इसका प्रभाव दिखाई देता है। आधुनिक काल में नारी पुन:मुक्त साँस लेने लगी। राज राम मोहनराय ने १८२९ सती प्रथा निषेध अधिनियम पारित कर सुधार कार्यो का प्रारंभ किया।"अंग्रजी शिक्षा के आरम्भ से ही पहली बार नारी अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग होने लगी है। यह भी सत्य है कि भारतीय नारी की गुलामी के विरोध में पहली आवाज पुरूष ने उठाई है।" [१०]

विधवा विवाह को मान्यता देने हेतु १५ नवंबर १९५६ को विधवा विवाह अधिनियम मान्यता दिलाई। इसके बाद अवैध कन्या वध प्रतिबंधीत होकर स्त्री शिक्ष का मार्ग खुला। ईश्वरचंद विद्यासागर ब्रम्ह समाज के संस्थापक इन्होंने १८५६ विधवा पुनर्विवाह सुधार अधिनियम परीत करने के साथ-साथ बाल विवाह,बहुविवाह आदि का विरोध किया।

१८४९ में पहला महिला स्कुल स्थापित किया । जो कॉलेज बेथुन कॉलेज के नाम से सुप्रसिध्द हुआ। प्रार्थना समाज के संसथापक आत्माराम पांडुरंग थे इन्होंने हिंदू समाज में फैली कुरीतियाँ थी जैसे अंतर्जातिय विवाह,विधवा विवाह,अच्छतोध्दार, नारी शिक्षा के लिए रात्रि पाठशालाएँ चलाई। आर्य समाज १८७५ स्वामी दयानन्द स्वरस्वती इन्होंने स्थापना की थी। पर्दा प्रथा का विरोध,स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। सबसे महत्वपूर्ण कार्य यह किया की विवाह के लिए लडकी की न्यून्यतम आयु १६ वर्ष एवं लडको को लिए यून्यतम आयु २५ वर्ष आर्य समाज द्वारा निर्धारित की गई। नारी के अंधकारमय जीवन में प्रकाश लाने का काम सर्वप्रथम कार्य शिक्षा के माध्यम से महान व्यक्ति महात्मा ज्योतिबा फुले इन्होंने अपनी पत्नी सावित्रिबाई फुले इनको साथ लेकर अस्पृश्यता निवारण,स्त्री शिक्षा महत्वपूर्ण कार्य किया।राजाराम मोहन रॉय इन्होंने "संवाद कौमदी " पत्रिका में सती प्रथा के विरोध में विचारात्मक लेख लिखा। सती बंदी अधिनियम के अनुसार जबरन सती कराने वालो को मृत्युदण्ड का प्रावधान किया गया। भारतीय समाज सुधारों को के साथ-साथ विदेशी महिलाओं का भी नारी मुक्ति के लिए महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ब्लावतस्की इन्होंने मद्रास में थियोसाफिकल सोसायटी, भगिनी निवेदिता ने बंगाल में नारी उत्थान का कार्य किया,एनी बेंसेन्ट इन्होंने शिक्षा का प्रचार एवं भारतीय कुप्रथओं का विरोध किया। १९१६ में श्रीमती नत्थी बाई दामोदर विश्वविद्यालय स्थापना की जो महिलाओ का प्रथम विश्वविद्यालय है। उन्नीसवी सदी के अन्त में पंडिता रमाबाई ने १९८२ में शारदा सदन की स्थपन किया,१९०९ में रमाबाई रानडे ने "सेवा सदन "स्थापन किया।

एक और नारी की स्थिति को सुधारने के लिए समाजसुधारको ने उल्लेखनिय कार्य किए तो दूसरी ओर भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर इन्होंने हिंदू कोड बिल अधिनियम मंजूर कर स्त्री की स्थिति को मजबूत करने का प्रयत्न किया है। डॉ.बाबा साहेब आंबेडकर इन्होंने दि हिंदू मॅरेज ॲक्ट (१९५५),दि हिंदू सक्सेशन ॲक्ट (जून १९५६),दि हिंदू मायनॉरिटी अँड गार्डियनशीप ॲक्ट (अगस्त १९५६) आदि महत्वपूर्ण अधिनियम महिलाओ की सुरक्षा के लिए बनाए। राजा राम मोहन राय, महर्षि दयानन्द, कर्मवीर भाऊराव पाटील, पंडिता रमाबाई, स्वामी विवेकानंद, म. गांधी, आचार्य विनोबा भावे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, कर्वे, रानडे, महार्षि दयानन्द सरस्वती, सावित्रिबाई फुले, म. फुले आदि समाजसुधारक का कार्य महत्त्वपूर्ण है। नारी की स्थिति में नया परिवर्तन हिंदू कोड बिल कानून ने आया है। प्रसाद जीवन नारी का महत्व विशद करते हुए कहते है,

"नारी तुम केवल श्रध्दा हो विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,जीवन के सुन्दर समतल में।"

पंत नारी स्वतंत्राता का नरा अपनी कविता से बुलंद करते दिखई दे रहे हैं।

"मुक्त करो नारी को मानव चिर बन्दिनी नारी को
युग युग की निर्मल कारा में जननि सखी प्यारी को।"

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नारी पुरातन मल्यों का त्याग कर नवीन मूल्यों को अपनाती हुई दिखाई देती है। वर्तमान में नारी को कानूनी अधिकार तो प्राप्त हुए किंतु समाज में उसे मानव का स्थान नहीं मिल सका है। कालानुसार नई-नई समस्याँ आज के नारी के सामने है। बलात्कार, स्त्री भ्रणहत्या, दहेज, मानसिक तथा शारीरिक शोषण नारी काफी मात्र में हो रहा है। आज भी यह समाज का चिता एवं चिंतन का विषय बन गया है।

संदर्भ सूची :-

१) संचारिका, संयुक्तांक, जनवरी-फरवरी-मार्च२००८, स्त्री की बदलती प्रतिमा, बाहेती के. पी., पृष्ट ३९.

२) समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रुप, डॉ. घनश्याम दास भुतड़ा, पृ १०२.

३) डॉ.विनोद सिंह, हिंदी के मनौविज्ञानिक उपन्यासों में नारी चित्रण, पृ ११९.

४) वहीं - पृष्ट ३९.

५) आशा रानी व्होरा, भारतीय नारी : दशा और दिशा,पृ १०.

६) श्रीरामचरीमानस, सुन्दर कांड, पद क्र ५८/३.

७) श्रीरामचरीमानस, अरण्यकांड

८) कबीर ग्रंथावली, श्याम सुंदर दास ,पृ ३१.

९) वहीं - पृष्ट ४०.

10) समकालीन हिंदी कहानियों में नारी के विविध रुप, डॉ. घनश्याम दास भुतड़ा, पृ १८६.